भारत में चिकित्सा पर्यटन का महत्व–एक सूक्ष्म अध्ययन

अनूप कुमार सिंह*

भारत में पर्यटन के व्यावसायिक स्वरूप की शुरूआत वर्ष 1948 में की गयी। लेकिन व्यापक तौर पर संगठित प्रयास वर्ष 1966 में 'भारतीय पर्यटन विकास निगम' के गठन से माना जाता है। वर्ष 1967 में 'पर्यटन और नागरिक उड्डयन मंत्रालय' की स्थापना की गयी। सरकारी तौर पर किए गए ये प्रयास नाकाफी साबित हुए और अस्सी के दशक तक भारत अन्य क्षेत्रों की तरह पर्यटन परिदृश्य पर भी पिछड़ा रहा। थाइलैंड, सिंगापुर, मलेशिया, यू.ए.ई. इंडोनेशिया, चीन, मालदीव, मॉरीशस, आसियान के अन्य देश ढांचागत सुविधाओं का विस्तार कर हमसे कहीं आगे निकल गए।

भारत को 'जैवविविधता' में आठवें स्थान पर माना जाता है। भारत में 5000 वर्षो की ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत है। समूचे भारत में प्राचीन शिल्प स्थापत्य के नमूने और पुरातात्विक स्थलों की भरमार होने के बावजूद शुरूआती दशकों में यथेष्ट सफलता नहीं मिली।

पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1982 के दौरान सरकार द्वारा एक विस्तृत पर्यटन नीति की घोषणा की गयी। वर्ष 1991 में पर्यटन को विदेशी निवेश के लिए प्राथमिकता का क्षेत्र घोषित किया गया। वर्ष 1992 में पर्यटन के लिए एक बृहद कार्य योजना तैयार की गयी। इस कार्य योजना के मुख्य लक्ष्यों में पर्यटकों की संख्या में तीव्र वृद्धि, पर्यटन को विदेशी मुद्रा अर्जन का क्षेत्र बनाना और रोजगार वृद्धि की नीतियां तैयार करना था।

किसी भी देश के पर्यटन उद्योग को शीर्ष पर ले जाने के लिए अनेक कारक उत्तरदायी होते हैं। प्रथम पर्यटन स्थलों के ढांचागत विकास को बढ़ावा दिया जाए, दूसरा पर्यटन और संस्कृति के तत्वों के संश्लेषण के लिए प्रत्येक राज्य व केंद्रशासित प्रदेश में संगठित प्रयास किए जाऐ।

पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बन चुका है। पिछले एक दशक में इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। मई, 2002 में नई राष्ट्रीय पर्यटन नीति की घोषणा की गयी जिसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास की गति को तीव्रता प्रदान करने में पर्यटन को प्रमुखता देना, रोजगार उत्पन्न करना एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में इसके अनुषंगी प्रभावों का उपयोग करना था। पर्यटन नीति, 2002 के तहत केन्द्र सरकार के तत्कालीन पर्यटन मंत्री जगमोहन ने इससे संबंधित मुख्य बातें इस प्रकार निर्धारित कीं–

1.अनेक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित व पुनरुद्धारित कर देश के पर्यटन मानचित्र पर प्रदर्शित करना।

2.देश के सभी राज्यों में पर्यटन हब का निर्माण करना जिसके द्वारा प्राचीन प्रासंगिक स्थानीय जीवनशैली के तत्वों को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अभिव्यक्त करना।

3.देश में पर्यटन की विविध विधाओं यथा ग्राम चिकित्सा, समुद्री साहसिक व क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देना।

4.देश में घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करना।

5.पर्यटन केन्द्रों को प्राचीन भारतीय चिकित्सा व्यवस्था से समादृत करना।

पर्यटन नीति के तहत मंत्रालय समय–समय पर ढांचागत सुविधाओं को बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएं शुरू करता है। अतिथि देवो भव, प्रियदर्शिनी, अतुल्य भारत, वीजा ऑन अराइवल जैसी पहले इनमें प्रमुख हैं। जापान, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, चीन जैसे देशों के पर्यटकों के लिए धार्मिक पर्यटन की नई शुरूआत करने के उद्देश्य से बौद्ध सर्किट विकसित किया जा रहा है।

देश में पर्यटन का नया अध्याय शुरू करने के उद्देश्य से चिकित्सा पर्यटन की रूपरेखा तय की गयी। भारत अपनी चिकित्सा पद्धतियों के लिए पूरे विश्व में विख्यात है। भारत की परम्परागत इलाज पद्धति और प्राकृतिक दवाओं की विरासत समूचे विश्व में प्रसारित करने के लक्ष्य के तहत चिकित्सा पर्यटन की नयी विधा अस्तित्व में आयी।

आज से कुछ वर्षो पूर्व तक चिकित्सा पर्यटन एक गुमनाम सा शब्द था। लेकिन आज यह स्वतः विकसित हो रहा है। भारत की चिकित्सा पद्धतियां अपनी उपयोगिता सिद्ध कर चुकी हैं। ध्यातव्य है कि चिकित्सा पर्यटन परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से शुरू किया गया है।

भारत सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा एक दशक पूर्व चिकित्सा पर्यटन का प्रारूप एक व्यापक रणनीति के तहत सुनिश्चित किया गया। इसी नीति के कार्य योजना के तहत हुए प्रयासों के कारण चिकित्सा पर्यटन का क्षेत्र विदेशी मुद्रा अर्जन और रोजगार वृद्धि का केन्द्र बन गया।

अतिथि प्रवक्ता, भूगोल विभाग, एस0पी0एम0 महाविद्यालय फाफामऊ, इलाहाबाद।

चिकित्सा पर्यटन के लिए भारत सबसे उपयुक्त स्थानों में से एक है। अतिविशिष्ट चिकित्सा देखभाल, उपकरण और सुविधाओं की भारत में उपलब्धता के कारण पर्यटक बड़ी संख्या में यहां आ रहे हैं। भारत विदेशी पर्यटकों को गुणवत्तापूर्ण और किफायती स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में दक्ष होता जा रहा है। भारतीय उद्योग परिसंघ के एक अध्ययन के अनुसार इस क्षेत्र में ऐसी आकर्षक क्षमता है कि वर्ष 2012 तक इसने 2.3 बिलियन डॉलर तक कारोबार किया। वर्ष 2004 में लगभग 150,000 विदेशी नागरिक उपचार के लिए भारत आए और प्रत्येक वर्ष इनकी संख्या 15 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। वर्ष 1995 में भारतीय चिकित्सा पद्धतियों आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी, सिद्ध बंगाली, आदि को मिलाकर एक नया विभाग 'आयुष' का गठन किया गया। आयुष के अंतर्गत आने वाली चिकित्सा पद्धतियों के विकास के लिए देश में चार शीर्ष अनुसंधान परिषदों की स्थापना की गयी साथ ही केंद्र सरकार द्वारा एक 'राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड' की भी स्थापना की गयी।

इन सबके साथ ही आधुनिक चिकित्सा पद्धति की नवीनतम तकनीकी भारत में उपलब्ध है। 2008–09 में AIMS की तर्ज पर छह नए अत्याधुनिक AIMS केन्द्र जोधपुर, पटना, भुवनेश्वर, ऋषिकेश, भोपाल और रायपुर में खोले गए। 2012–13 के बजट में 7 अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस मेडिकल कॉलेजों की स्थापना का प्रावधान भी किया गया। वस्तुतः भारत में चिकित्सा पर्यटन के विस्तार की अनंत संभावनाएं विद्यमान हैं क्योंकि भारत में प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक विरासतों की विपुल बहुलता है।

मेडिकल साइंस की 200 वर्षो की यात्रा के बाद उसमें थकावट के लक्षण दिखने लगे हैं। एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति की निरंतर जटिल होती प्रक्रियाएं, निष्प्रभावी होते एंटीबायोटिक्स और रोगाणुओं की बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता ने समूचे विश्व को एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति की खोज के लिए विवश कर दिया है। यहीं से आधुनिक विश्व में प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों की प्रासंगिकता स्पष्ट होने लगती है।

निष्कर्षतः–हम भारतीय चिकित्सा पर्यटन के विकास के लिए तीन मुख्य कारक महत्वपूर्ण मान सकते हैं–

1. आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों द्वारा भारतीय चिकित्सा तंत्र में सेवाओं का उच्चतम स्तर और सस्ता व्यय। भारत में इलाज की कम कीमत के कारण सार्क से लेकर अमेरिकी यूरोपीय देशों के पर्यटक बड़ी मात्रा में आकर्षित हो रहे हैं।
2. प्राचीन व वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की उपलब्धता, जिनका वैश्विक स्तर पर सत्यापन हो चुका है।

3. पर्यटन के तमाम अन्य विविध आयाम जैसे क्रूज पर्यटन, ग्राम्य पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, इकोटूरिज्म (पर्यावरणीय पर्यटन) की पर्याप्त संभावनाएं हैं। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, पूर्वोत्तर के राज्यों में पर्वतारोहण ट्रैकिंग, स्केटिंग, रॉकक्लाइम्बिंग, पैराग्लाडिंग की विशिष्ट परिस्थितियाँ है। इस दिशा में थोड़ा सार्थक प्रयास करने से पर्यटन व्यवसाय को नया आयाम दिया जा सकता है।

मार्केट सर्वेक्षणों की विश्व प्रसिद्ध संस्था RNCOS ने प्रकाशित किया है कि एशिया के चिकित्सा पर्यटन में विगत 2008–2012 में तीव्र वृद्धि हुई है। भारत में स्थानीय चिकित्सा पद्धतियां भी विदेशी पर्यटकों मे खासी लोकप्रिय हो रही हैं। ध्यातव्य है कि आयुर्वेद के द्वारा सौन्दर्य वर्धन, पुनर्यौवन प्राप्ति को लेकर खासा उत्साह देखा जा रहा है।

केरल की पंच–कर्म पद्धति से इलाज कराने के लिए विदेशों से कई लाख पर्यटक आए। केरल में सर्वप्रथम पंचकर्म पद्धति को चिकित्सा पर्यटन से जोड़कर प्रचारित करने की योजना क्रियान्वित की गयी जो अत्यधिक सफल रही। इसके अतिरिक्त अब तनाव मुक्ति, मोटापा, योग, कायाकल्प चिकित्सा पैकेजों के तहत इस उद्योग का निरंतर विस्तार हो रहा है।

क्रूज पर्यटन से संबद्ध तमाम कंपनियां अपने पोतों में आर्युवैदिक सेवाएं प्रदान कर रही हैं। कोच्चि, मुंबई, न्यू मंगलौर, मर्मागांव बंदरगाह न्यास संयुक्त रूप से इस अनूठी योजना को क्रियान्वित कर रहे हैं।

जहां तक चिकित्सा पर्यटन का भारत के लिए महत्व का प्रश्न है, यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक लाभकारी उद्योग बन चुका है। जिसके कारण विदेशी मुद्रा की प्राप्ति के साथ ही रोजगार के अवसर निर्मित होते हैं।

आमदनी और रोजगारी दोनों के ही लिहाज से यह विश्व का सबसे बड़ा उद्योग है। पर्यटन का देश की आर्थिक–सामाजिक प्रगति से बड़ा गहरा संबंध है। इसका उच्च राजस्व पूंजी अनुपात है।

पर्यटन के अग्रणी संगठन वर्ल्ड ट्रेवेल एण्ड टूरिज्म कौंसिल की एक रिर्पोट के अनुसार आने वाले वर्षो में भारत के पर्यटन का विस्तार लगभग 11 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा, जिसमें चिकित्सा पर्यटन की बड़ी भागीदारी होगी। कहा गया है कि वर्ष 2020 तक क्षेत्रीय चिकित्सा पर्यटन में भारत की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत तक होगी।

भारत में संसाधनों की बहुलता है। प्राचीन काल से पर्वतों की जड़ी–बूटियों व वनस्पतियों से चिकित्सा कार्य किए जा रहे हैं। सस्ते और सटीक तरीकों से रोगों का इलाज करने की सैकड़ों स्थानीय पद्धतियां अस्तित्व में हैं जिनका बाजार आधारित उपयोग कर अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

इन पद्धतियों द्वारा सरलता से इलाज करवाना विदेशी पर्यटकों में खास आकर्षण पैदा कर रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चिकित्सा सुविधाओं के आधार पर भारत में बेहद सस्ती और गुणवत्ता पूर्ण सेवाएं प्राप्त होती हैं।

भारतीय चिकित्सा पद्धतियां कुछ बिंदुओं पर पश्चिमी देशों व अमेरिकी परिदृश्य को कड़ी टक्कर देती हैं। पर्यटन की तमाम अनुकूल और विविध्यपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद भारत में अपेक्षित परिणाम हासिल नहीं किए जा सके हैं।

पर्यटन की आधारभूत संरचना पर हम अन्य देशों से बहुत पीछे हैं। अनुमानतः 20 प्रतिशत पर्यटक भारत में चिकित्सा लाभ के लिए भारत आते हैं। केन्द्र सरकार पर्यटकों को अत्यंत उदार शर्तो पर चिकित्सा वीजा उपलब्ध करा रही हैं। इतनी विस्तारित संभावनाओं के बावजूद हमारे देश की आधारभूत चिकित्सकीय ढांचा अत्यधिक पिछड़ी व अविकसित है। चिकित्सकों की संख्या बहुत कम है, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कुशल डॉक्टरों की संख्या कम है। चिकित्सा पर्यटन के विस्तार की संभावनाओं और आधारभूत ढांचे की चुनौतियों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि भारत की डगमगाती अर्थव्यवस्था के लिए इससे बढ़िया क्षेत्र विदेशी मुद्रा के अर्जन के लिए मिलना मुश्किल है साथ ही रोजगार सृजन के लिए यह अनुकूल आधार है।

चिकित्सा पर्यटन का विस्तार भारत के आर्थिक, सामाजिक प्रगति को नयी दिशा देने में पूर्ण सक्षम है। इस तथ्य को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) के पर्यटन संस्करण 2012 के अनुसार समझा जा सकता है–पर्यटन का हिस्सा वैश्विक रोजगार का 6–7 प्रतिशत है और वैश्विक आय का 5 प्रतिशत है। समूचे वैश्विक निर्यात में इसका हिस्सा 12.2 प्रतिशत है और यह विश्व का सबसे बड़ा निर्यात उद्योग है।

यह विश्व की सबसे बड़ी रोजगार प्रदाता सेवा है। सबसे महत्वपूर्ण कारक यह है कि देशाटन और पर्यटन उद्योग में 70 प्रतिशत कार्यबल महिलाओं का है। अतः यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कहीं अधिक समावेशित विकास का अग्रदूत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. सिंह, जे0बी0 2005, पर्यटन भूगोल, शिवालिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. डॉ0 सुरेश चन्द्र बंसल, पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन आधारभूत सिद्धान्त, एच0के0 प्रिंटर्स, मण्डल नगर, सहारनपुर।
3. डॉ0 अल्का गौतम, 2013 भारत का वृहद् भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

4. एस0के0 शर्मा, 2011, भारत (लोग और अर्थयवस्था) एन0सी0ई0 आर0टी0 कैम्पस, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली।
5. कुरुक्षेत्र (हिन्दी), जून 2006, पेज–4
6. योजना (हिन्दी), मई 2015
7. वार्षिक रिपोर्ट, 2014–15, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।
8. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय की अधिकारिक वेबसाइट, www.tourism.gov.in
9. घटनाचक्र अतिरिक्तांक, निबन्ध, समसामयिक घटनाचक्र, इलाहाबाद, पेज 45–47